Study Of Education Problems of Baiga Tribe of District -Anuppur

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. – 9, No. – 1, Nov. - 2021 | 2021

अनूपपुर जिले के बैगा जनजाति की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन

डॉ. तरन्नुम शरबत
Govt. Tulsi College, Anuppur (M.P.)

प्रस्तावना :— मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका समाज में मानवीय विकास का चक्र निरंतर चलता रहता है समाज का कर्तव्य है की समाज का प्रत्येक प्राणी सुखी संपन्न जीवन यापन करें इस हेतु सरकार ने विभिन्न प्रकार की योजनाओं का क्रियान्वयन किया है वर्तमान परिवेश में आदिवासी जनजाति समुदाय का विकास सरकार की प्रमुखता है देश के संपूर्ण विकास में सभी समुदाय का सहयोग आवश्यक है किसी एक समुदाय को छोड़कर देश का समग्र विकास नहीं किया जा सकता है इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व की अनेक मानव जातियों ने विकास का कदम एक साथ रखा जिसमें से कुछ मानव जातियों ने अपना विकास परिष्कृत रूप से किया और आधुनिक प्रजातियों में आ गए किंतु आधुनिक युग में अनेक आदिम जाति विलुप्त हो गए या विलुप्त टी के कगार पर हैं किंतु भारतीय आदिम जनजाति में अपने आप को विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रखा है जो कि भारतीय जनजातियों की प्रमुख विशेषता है पराधीनता के समय में जब अंग्रेजों ने इनके निवास स्थानों पर अतिक्रमण किया तो यह सीधे साधे आदिवासियों ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध अपने परंपरागत हथियारों जैसे तीर धनुष भाले से से लड़ाई मेन नेतृत्व किया और अपने साहसिक प्रवृत्ति का परिचय दिया

यह आदिवासी और जनजातियों जंगलों नदी नालों और जंगली जानवरों के बीच सदियों से सहचर करते आ रहे हैं यदि कोई इनके क्षेत्रों में अतिक्रमण करें तो यह सीधे साधे आदिवासी भी उग्र हो उठते हैं यह आदिवासी समुदाय जो सदियों से जंगलों में रहते आ रहे हैं इन जनजातियों में सामाजिक आर्थिक राजनीतिक विकास की कोई खास छोड़ भी नहीं है इसी कारण इस समुदाय में सदियों बाद भी विकासात्मक परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है यह जनजाति अपने परिवार समाज में ही खुशियां सुखी संपन्न है ऐसा लगता है कि यह दूसरे समुदाय या समाज के लोगों से मिलना ही नहीं चाहते हैं और कोई वैज्ञानिक इसके बारे में अध्ययन करना चाहता है तो यह अपने इतिहास के बारे में जानते ही नहीं हैं या अपने बारे में कुछ बताना ही नहीं चाहती हैं वर्तमान में यह जनजाति अत्यंत पिछड़ी गरीब अभावग्रस्त और मुख्यधारा से विमुख है

आधुनिक समाज की सोच ने जीवन को लाभ की वस्तु बना दिया है लेकिन बढ़ेगा आदिवासियों के लिए जंगल एक पूरी जीवन शैली है आजीविका का साधन है परंतु वन नीति भूमि अधिग्रहण एवं वन संरक्षण प्रबंधन जैसे आधारहीन कार्यक्रम से वनों का संरक्षण तो कम हो रहा है उल्टे तनाव बढ़ता जा रहा है वन संरक्षण में आदिवासियों का दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण है जिस पर ना तो अमल किया जा रहा है और ना ही उसे मान्यता दी जा रही है उल्लेखनीय है कि जंगल आदिवासियों का आर्थिक आधार ही नहीं वरन जीवन का आधार भी है बैगा समुदाय की जीवन शैली कार्यशैली में जंगल के दोहन का उनका तरीका अलग है अपनी नियम कायदों से वे पुरखों के जमाने से जंगल बचाते आ रहे हैं आदिवासी अपनी जरूरत के अनुसार जंगल से जितना लेते हैं बदले में उसे कुछ ना कुछ देते हैं उनकी आदर से आज 1 बचे हुए हैं जंगल से अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए आधुनिक सोचने मध्य प्रदेश के आदिवासियों के समक्ष कई समस्याओं को जन्म दे रहा है अगर देखा जाए तो हजारों साल से आज तक जंगल की जो रक्षा आदिवासियों की संस्कृति व परंपरा के चलते हो पाई है उसका बड़ा हिस्सा हम महेश कुछ दशकों में साफ कर चुके हैं अगर वास्तव में हम इस समुदाय के समस्याओं का निराकरण चाहते हैं तो उन्हें जमीन जल जंगल से वंचित होने से बचाएं

जनजाति से आशय :— भारतीय समाज में जनजाति से आशय वन जाति आदिवासी वनवासी आदिम जाति गिरिजन आदि से है यह जनजाति ऐसे लोगों का समुदाय है जो आज भी जंगलों में निवास करते हैं प्राकृतिक साधनों से ही अपना भोजन ग्रहण करते हैं आधुनिक सभ्य समाज से दूर रहते हैं तथा शिक्षा कृषि उद्योग धंधे आदि से अपरिचित है भारत की जनगणना 2011 के अनुसार यह अपने सीमित साधनों से केवल जीवित रहना ही सीख सके हैं और आज भी विज्ञान कि इस चकाचौंध व सभ्यता की ओर से अपरिचित ही है ऐसे ही अपरिचित लोगों का उल्लेख भारतीय संविधान में अनुसूचित आदिम जाति व जनजाति कोष्टक ट्राइबल के अंतर्गत किया गया है

भारतीय इतिहास में आदिवासी समूह का वर्णन प्राचीन समय से मिलता है डॉक्टर श्री नाथ शर्मा के जनजातीय अध्ययन के अनुसार भारतीय समाज में प्रगतिवाद इतिहासिक काल से लेकर आज तक आदि

PRINCIPAL Govt. Tulsi College Anuppur (M.P.) Dist. Anuppur

E-mail: hegtdcano@mp.gov.in ☎9893076404

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 9, No. - 1, Nov. - 2021 | 2021

संदर्भ सूची :–

1. अग्रवाल,आर.एन., (1976), नेशनलमूवमेंट एण्ड कांस्टीटचूश्यानल डेवलपमेण्ट आफ इंडिया, मेट्रोपोलियन बुक कम्पनी, दिल्ली।
2. कौशिक, सुशीला (1993), वूमेन पार्टिसिपेशन इन पॉलिटिक्स, विकास पब्लिकेशननई दिल्ली।
3. फोर्ब्स,जी (1996), दि न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डियन वूमेन इन मार्डन इण्डिया कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस , कैम्ब्रिज।
4. फिलिप्स, एना (1996), दि पॉलिटिक्स आफ प्रजेन्स, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड।
5. बाटलीवाला, श्रीलता (1994), दि मीनिंग बाफ वूमेन्स इम्पावरेण्टरू न्यू कंसेप्ट्स फ्रा एक्शन इन पापुलेशन पॉलिसीज किरंसीडर्ड हेल्थ इम्पावरमेन्ट एण्ड राइट्स, हावर्ड यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन लंदन।
6. वैद्य, के.सी. (1997), पॉलिटिकल इम्पावरमेंट आफ वूमेन एट दि ग्रासरूट्सः ए केस स्टडी आफ कर्नाटक, कनिष्क पब्लिकेशर्स, नई दिल्ली।
7. शाह, नंदिता एवं नंदिता गांधी (1992) दि कोटा क्वेशचनः वूमेन एण्ड इलेकटोरल सीट्स, अक्षर पब्लिकेशन बाम्बे।
8. शाह घनश्याम (2008), कास्ट एण्ड डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स इन इण्डिया ओरिएण्ट लॉगमैन प्रा.वि. नई दिल्ली।
9. सिवाच, जे.आर., (1990), डायनामिक्स आफ इंडियन गवर्नमेंट एण्ड पालिटिक्स, स्टर्लिंग पब्लिशर नई दिल्ली।
10. सिंह, रामगोपाल (1999), सामाजिक न्याय लोकतंत्र और जाति व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
11. सुमन, कृष्णकान्त, (2001) इक्कीसवीं सदी की ओर, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली।
12. सन, अमर्त्य, (2010), श्न्याय का स्वरूप राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
13. कीर्तने मनीषा (2012) स्त्रियों की स्थिति के संदर्भ में मानवाधिकार और सद्यस्थिति, रिसर्च जर्नल आफ आर्ट्स, मैनेजमेण्ट एण्ड सोशल साइंसेज, वा–14, वर्ष–7, जून।
14. चट्टोपाध्याय, अरूधंती (2012), भारतीय राज्यों में स्त्री विकास, योजना वर्ष–56, अंक–6, जून, योजना भवन, नई दिल्ली।

PRINCIPAL
Govt. Tulsi College Anuppur
Dist. Anuppur (M.P.)